

જૈન મંત્રમાં બોલાતા અશુદ્ધ ઉચ્ચારો

અશુદ્ધ ઉચ્ચારો

શુદ્ધ ઉચ્ચારો

નવકાર

- | | |
|----------------|-----------------|
| ૧. નમોરિહંતાણં | નમો અરિહંતાણં |
| ૨. નમો આરિયાણં | નમો આયરિયાણં |
| ૩. સવપાવપણાસણો | સવ્વપાવપ્પણાસણો |

પંચિંદિય

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| ૧. તહનહવિહ / તવનવવિહ | તહ નવવિહ |
| ૨. પંચમહાવયજુતો | પંચ મહાવ્વયજુતો |
| ૩. પંચવિચારપાલણ સમત્યો | પંચવિહાચાર પાલણ સમત્યો. |
| ૪. છત્તીસ ગુરુ ગુરુ મજ્જ | છત્તીસ ગુણો ગુરુ મજ્જ |

ખમાસમણ

- | | |
|---------------------------|--------------------|
| ૧. ઈચ્છામિ ખમાસણો | ઈચ્છામિ ખમાસમણો |
| ૨. વંદિઉ (વંદેઉ) જાવણિજાએ | વંદિઉં જાવણિજ્જાએ. |
| ૩. મથેણ વંદામિ | મત્થએણ વંદામિ. |

ઈરિયાદહિયં

- | | |
|------------------------|--------------------|
| ૧. ઈચ્છા. સંદિ. ભગવાન્ | ઈચ્છા. સંદિ. ભગવન્ |
| ૨. ઈચ્છામિ પડિક્કમિઉં | ઈચ્છામિ પડિક્કમિઉં |
| ૩. ઈરિયાવિયાએ | ઈરિયાવહિયાએ |
| ૪. મક્કડા | મક્કડા |
| ૫. એકિંદિયા | એગિંદિયા |
| ૬. અભિયા | અભિહયા |
| ૭. સંઘાયા | સંઘાઈયા |
| ૮. ઉદ્ધવિયા | ઉદ્ધવિયા |

તસ્સ ઉત્તરી

- | | |
|--------------------|-------------------|
| ૧. પાયચિત્ કર્ણેણં | પાયચ્છિત્ કર્ણેણં |
| ૨. નિગ્ઘાયણ ઠાએ | નિગ્ઘાયણઠ્ઠાએ |
| ૩. કાઉસગં | કાઉસ્સગં |

અન્નત્થ

- | | |
|------------------|----------------------|
| ૧. અન્નત્થ | અન્નત્થ |
| ૨. ખાસસિએણં | ખાસિએણં |
| ૩. જંભાએણં | જંભાઈએણં |
| ૪. સુહમેહિ | સુહુમેહિં |
| ૫. એવમાઈ આગારેહિ | એવમાહિ એહિં આગારેહિં |
| ૬. માણેણં | મોણેણં |

અશુદ્ધ ઉચ્ચારો

શુદ્ધ ઉચ્ચારો

લોગસ્સ

- | | | |
|----|------------------------|--------------------------|
| ૧. | કિતર્થસં | કિતર્થસ્સં |
| ૨. | સંભવમભિ અણંદણં ચ | સંભવ-મભિણંદણં ચ |
| ૩. | પઉમપહં | પઉમપ્પહં |
| ૪. | ચંદપહં | ચંદપ્પહં |
| ૫. | કુંથુ | કુંથું |
| ૬. | એવ મહે અભિથુઆ | એવં મએ અભિથુઆ |
| ૭. | વિહુચરયમલ્લા | વિહુચરયમલા |
| ૮. | સિદ્ધા સિદ્ધિ મમ દિસતુ | સિદ્ધા સિદ્ધિં મમ દિસંતુ |

કરેમિ ભંતે!

- | | | |
|----|-------------------|-----------------|
| ૧. | પચ્ખામિ | પચ્ચક્ખામિ |
| ૨. | દુવિહેણં તિવિહેણં | દુવિહં તિવિહેણં |
| ૩. | માણેણં વાએણં | મણેણં વાયાએ |

સામાર્થઅ વચબુતો

- | | | |
|----|------------|-------------|
| ૧. | ઉકકએ | ઉ કએ |
| ૨. | એએણ કારણેણ | એએણ કારણેણં |

જગચિંતામણિ

- | | | |
|----|------------|-------------|
| ૧. | અપડિહય | અપ્પડિહય |
| ૨. | કમ્મભૂમિહિ | કમ્મભૂમિહિં |
| ૩. | મુણિખિહુ | મુણિખિહું |
| ૪. | ઉચ્ચિંજત | ઉચ્ચિંજતિ |
| ૫. | બાસિયાઈ | બાસિયાઈં |
| ૬. | સયાઈ | સયાઈં |
| ૭. | અસિઈ | અસિઈં |

જં કિંચિ

- | | | |
|----|---------------|----------------|
| ૧. | માણસે લોએ | માણુસે લોએ |
| ૨. | જાઈ જિણખિંબાઈ | જાઈ જિણખિંબાઈં |
| ૩. | તાઈ સવ્વાઈ | તાઈ સવ્વાઈં |

નમુત્યુ ણં

- | | | |
|----|-------------------------|------------------------|
| ૧. | લોગ પજ્જોગરાણં | લોગ પજ્જોઅગરાણં |
| ૨. | ચખ્ખુદયાણં, મગ્ગદયાણં | ચક્ખુદયાણં, મગ્ગદયાણં |
| ૩. | ધમ્મદયાણં, ધમ્મદેસિયાણં | ધમ્મદયાણં, ધમ્મદેસયાણં |
| ૪. | ચક્કવટ્ટીણં | ચક્કવટ્ટીણં |
| ૫. | અપડિહયવરનાણં | અપ્પડિહરવરનાણ |
| ૬. | જિણાણં જાવયાણં | જિણાણં જાવયાણં |
| ૭. | તિણ્ણાણં તારચાણં | તિણ્ણાણં તારચાણં |

અશુદ્ધ ઉચ્ચારો

શુદ્ધ ઉચ્ચારો

૮. બુદ્ધાણં બોહ્યાણં
૯. સવનૂણં
૧૦. મપુણરાવિતિ
૧૧. જે અઈઆ સિદ્ધા
૧૨. ભવિસંતિ અણાગએ કાલે

- બુદ્ધાણં બોહ્યાણં
- સવ્વજ્ઞૂણં
- મપુણરાવિતિ
- જે અ અઈઆ સિદ્ધા
- ભવિસ્સંતિ ણાગએ કાલે

જાવંતિ ચેઈયાઈ

૧. જાવંત ચેઈયાઈ
૨. સવ્વાઈ તાઈ
૩. ઈઅ સંતો તત્થ સંતાઈ

- જાવંતિ ચેઈયાઈ
- સવ્વાઈ તાઈ
- ઈહ સંતો તત્થ સંતાઈ

જાવંત કે વિ સાહૂ

૧. જાવંતિ કે વિ સાહૂ
૨. મહાવિદેહે
૩. પણહો
૪. તિદંડ વીરિયાણં

- જાવંત કે વિ સાહૂ
- મહાવિદેહે અ
- પણઓ
- તિદંડ વિરયાણં

નમોઽર્હત્

૧. નમોઽર્હત્
૨. સિધાચાર્યો
૩. પાધ્યાયે

- નમોઽર્હત્
- સિદ્ધાચાર્યો
- પાધ્યાય

ઉવસ્સગ્ગહરં

૧. મંગલકલ્યાણઆવાસં
૨. તુઅ સમતે લહ્ને
૩. પાવંતિ અવિઘેણં
૪. ઈહ સંથુઓ મહાયસ્સ
૫. ભત્તિભર - હિએણ
૬. દિજ્જ બોહિ
૭. પાસ જિણચંદં

- મંગલક્લાણઆવાસં
- તુહ સમ્મતે લહ્ને
- પાવંતિ અવિઘેણં
- ઈઅ સંથુઓ મહાયસ
- ભત્તિબ્ભર નિબ્ભરેણ હિયએણ
- દિજ્જ બોહિં
- પાસ જિણચંદ !

જય વીયરાય

૧. જય વીયરાય
૨. હોઉ મમ
૩. મગ્ગા અણુસારિઆ
૪. લોગવિરુદ્ધચ્ચાઓ
૫. તવયણસેવણા
૬. વારિજઈ
૭. નિયાણબંધણ
૮. પ્રણામ કર્ણેણં
૯. સર્વમંગલ્યમંગલ્યં
૧૦. પ્રધાન સર્વધર્માણં

- જય વીયરાય
- હોઉ મમં
- મગ્ગાણુસારિઆ
- લોગવિરુદ્ધચ્ચાઓ
- તવ્વયણસેવણા
- વારિજઈ
- નિયાણબંધણં
- પણામ કર્ણેણં
- સર્વમંગલમંગલ્યં
- પ્રધાનં સર્વધર્માણં

अशुद्ध उच्यारो

शुद्ध उच्यारो

अरिहंत चेईयाणं

- | | |
|-------------------------|-----------------------|
| १. सिद्धाणे मेहाणे धिणे | सद्धाणे मेहाणे धिणणे |
| २. अणुपेहाणे वटमाणीणे | अणुपेहाणे वट्ट-माणीणे |

कल्लाणकंडं

- | | |
|----------------|-------------|
| १. कल्याणकंडं | कल्लाणकंडं |
| २. पढम जिणं | पढमं जिणं |
| ३. सुगणिकठाणं | सुगुणिकठाणं |
| ४. भतीय वंटे | भतीय वंटे |
| ५. अप्पारसंसार | अपारसंसार |
| ६. समुद्रपारं | समुद्रपारं |
| ७. सव्ये जिणं | सव्ये जिणं |

संसारदावानल

- | | |
|--------------------|-----------------|
| १. नम्मामि वीरं | नमामि वीरं |
| २. लिङ्गलोलालिमाला | लीट-लोला-लिमाला |
| ३. सुरपटपटवी | सुपटपटवी |

पुक्करवरदीवट्टे

- | | |
|------------------------|--------------------|
| १. सिद्धे भो! पयओ अणमो | सिद्धे भो! पयओ णमो |
| २. किण्णरगणसण्णभूअ | किण्णरगणसण्णभूअ |

सिद्धाणं णुद्धाणं

- | | |
|----------------------|-------------------|
| १. लोअगमुवगयाणं | लोअगगमुवगयाणं |
| २. नरं व नारि वा | नरं व नारिं वा |
| ३. तमधम्मयक्कवट्टीणं | तं धम्मयक्कवट्टीं |

वेयावस्यगाराणं

- | | |
|---------------------------------|--------------------------|
| १. सम्मदिट्ठि | सम्मदिट्ठि |
| २. भगवानं आचार्य उपाध्यायं | भगवानं आचार्यं उपाध्यायं |
| ३. सर्वसाधुभ्यं के सर्वसाधुभ्यः | सर्वसाधुं |

ईरुणमि ठामि

- | | |
|---------------------|-------------------|
| १. उस्सुतो उमग्गो | उस्सुतो उमग्गो |
| २. दुव्विचिंतिओ | दुव्विचिंतिओ |
| ३. तिण्ह | तिण्हं |
| ४. मिच्छामि दुक्कडं | मिच्छा मि दुक्कडं |

नाणंमि

- | | |
|----------------------|-------------------|
| १. आयारणं आयारो | आयारणं आयारो |
| २. निरसंकिअ निरसंकिअ | निरसंकिअ निरसंकिअ |
| ३. वरुणल पत्तावणे | वरुणलपत्तावणे |
| ४. पंचहिं समिहिं | पंचहिं समिहिं |
| ५. वितीसंभेवणं | विती-संभेवणं |
| ६. परकमणं | परकमणं |

अशुद्ध उच्यारो

शुद्ध उच्यारो

वांछलां

१. वंछि	वंछि
२. निस्सिहिआअे	निसीहिआअे
३. निस्सिहि	निसीहि
४. किल्लामो	किलामो
५. अप् किलंपां	अप्पकिलंपां
६. वरुंको	वरुंको
७. ज्वणि जंयण्णे	ज्वणि जं य ण्णे
८. वरुंक्कं	वरुंक्कं
९. तितीसन्नयराअे	तितिसन्नयराअे
१०. मण्णुक्कडाअे वरुंक्कडाअे कायडेक्कडाअे	मण्णुक्कडाअे वरुंक्कडाअे कायडेक्कडाअे
११. सव्वधम्मार्हक्कमण्णोअे	सव्वधम्मार्हक्कमण्णोअे

सात लाण

१. जे लाण जेण्णि	जे लाण जेण्णिय
२. तिर्यय पंयिण्णिय	तिर्यय पंयेण्णिय
३. अनुमोध्यो होय	अनुमोधो होय
४. मन-वयण-कायअे करी	मन-वयण-कायाअे करी
तस्स मिच्छामि दुक्कं	मिच्छा मि दुक्कं

पहेले प्राणतिपात

१. अगियारमे द्वेष	अगियारमे द्वेष
२. अनुमोध्युं होय	अनुमोधुं होय
३. मन-वयण-कायअे करी	मन-वयण-कायाअे करी
तस्स मिच्छामि दुक्कं	मिच्छा मि दुक्कं

वंछित्तु

१. वंछित्तु सव सिद्धे	वंछित्तु सव्व सिद्धे
२. र्छामि पडिक्कमि	रुंछामि पडिक्कमि
३. सावग धम्मार्हयारस्स	सावग धम्मार्हयारस्स
४. सुहुमो अ णायरो वा	सुहुमो अ णायरो वा
५. तं निंटे तं य गरुहामि	तं निंटे तं य गरुहामि
६. पडिक्कमे देवसिअं सव्वं	पडिक्कमे देवसिअं सव्वं
७. अप्पसत्थेहि	अप्पसत्थेहिं
८. आगमणे निगमणे	आगमणे निग्गमणे
९. छक्कायसमारंणे	छक्कायसमारंणे
१०. पंचणमणुवयाणं गुणवयाणं	पंचणमणुवयाणं गुणवयाणं
११. थूलग पणार्हवाय विरुंओ	थूलग पणार्हवाय विरुंओ
१२. पटम वयस्स-रुंआरे	पटम वयस्स-रुंआरे
१३. णीअेणुवयमि	णीअे अणुवयमि
१४. आयरियमपसत्थे	आयरियमपसत्थे
१५. र्थ पमायप्पसंगेणं	र्थ पमायप्पसंगेणं

अशुद्ध उच्यारो

शुद्ध उच्यारो

१६. अपरिगहिआर्तत
१७. दुपअे चउपयम्भि
१८. उवभोगे परिभोगे
१९. भाडी झोडी सुवजेअे कम्मं
२०. वाणिज्जं येव दंतं
२१. अेवं षु जंतापिल्लए
२२. निलंछणं
२३. असय पोसं य वणिज्ज
२४. तएकंठे
२५. कंदप्पे कुकुएअे
२६. अहिगरण भोगअरित्ते
२७. सयिते निभवणे
२८. वायस्स वायाअे
२९. न य संभारिआ
३०. पाव पणसणीय
३१. विणिगय क्हाए
३२. विरिओमि विराहणअे
३३. ञामेमि सव्वं जुवे
३४. दुगांछिअं सव्वं

- अपरिग्गहिआ-र्तत
- दुपअे चउपयम्भि
- उवभोग-परिभोगे
- भाडी झोडी सुवज्जअे कम्मं
- वाणिज्जं येव दंत
- अेवं षु जंत-पिल्लए
- निलंछणं
- असय पोसं य वणिज्ज
- तएकट्टे
- कंदप्पे कुकुएअे
- अहिगरण भोग अरित्ते
- सयिते निज्जिभवणे
- वाएअस्स वायाअे
- न य संभरिआ
- पावपणसणीय
- विणिग्गय क्हाए
- विरओमि विराहणअे
- ञामेमि सव्वं जुवे
- दुगांछिअं सव्वं

अण्भुट्ठिओ

१. अण्भुट्ठिओमि अभ्यन्तर
२. विणिये
३. सुहमं वा

- अण्भुट्ठिओमि अण्भिततर
- विणिये
- सुहमं वा

आयरिय उवज्जाअे

१. भगवो अंजलि

- भगवओ अंजलिं

भित्तदेवया

१. यरण सएअेहिं

- यरण सहियेहिं

नमोस्तु

१. जयाय क्कमलावलिं
२. सद्रशैरिति
३. जन्तुनिवृति
४. वृष्टिसन्निभो

- जयाय: क्कमलावलिं
- सद्रशैरिति
- जन्तुनिवृतिं
- वृष्टिसन्निभो

विशाललोचन

१. प्रोधत् दंतांशु
२. ञणमपि
३. अपूर्वचन्द्रं
४. ञुधै नमस्कृतम्

- प्रोधद्-दंतांशु
- तृणमपि
- अपूर्वचन्द्रं
- ञुधैर्नमस्कृतम्

अशुद्ध उच्यारो

शुद्ध उच्यारो

अङ्गार्णजेसु

१. अढार्ण जेसु
२. पनरसु
३. पडिगहधारा
४. पंचमहावयधारा
५. अठारस सहस
६. अङ्गुयायार चरिता
८. मथेण वंदमि

- अङ्गार्णजेसु
- पनरससु
- पडिग्गहधारा
- पंचमहाव्यधारा
- अङ्गरस सहस
- अङ्गुयायार चरिता
- मथेण वंदमि

लघु शान्ति

१. मन्त्रपढे
२. भगवते हते
३. नमो नमो शान्तिदेवाय
४. पालनोधत
५. प्रथमनाय
६. प्रधान-वाक्यो प्रयोग
७. विजिया कुरुते
८. निर्वृतिनिर्वाणजननि!
९. नित्यमुद्यते देवि!
१०. सम्यग् द्रष्टीनां
११. कुरु कुरु सदेतिं
१२. तुष्टि पुष्टि स्वस्ती
१३. य क्षः
१४. कुरुते शान्ति
१५. नमो नमो शान्तये तस्मै
१६. विदम्बित स्तव शान्ते
१७. यश्चेनं पठति सदा
१८. शान्तिं पदं यायात्
१९. सूरि श्रीमानदेवश्च
२०. उपसर्गा
२१. छिद्यन्ते

- मन्त्रपढैः
- भगवतेर्हते
- नमो नमः शान्तिदेवाय
- पालनोधत
- प्रथमनाय
- प्रधान-वाक्योपयोग
- विजया कुरुते
- निर्वृतिनिर्वाणजननि!
- नित्यमुद्यते देवि!
- सम्यग् द्रष्टीनां
- कुरु कुरु सदेति
- तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह
- यः क्षः
- कुरुते शान्तिं
- नमो नमः शान्तये तस्मै
- विदम्बितः स्तवः शान्तेः
- यश्चेनं पठति सदा
- शान्तिपदं यायात्
- सूरिः श्रीमानदेवश्च
- उपसर्गाः
- छिद्यन्ते

यउक्कसाय

१. यउक्कसाय
२. भुवणतय
३. पयच्छिउ

- यउक्कसाय
- भुवणतय
- पयच्छिउ

भरहेसर

१. वयरिसि
२. अेमाई महासता
३. गुणगणोहि संजुता
४. जेसिं नामगहणे
५. पावणंधा
६. कएहृ

- वयरिसि
- अेमाई महासता
- गुणगणोहिं संजुता
- जेसिं नामग्गहणे
- पावण्णंधा
- कएहृ

अशुद्ध उच्यारो

शुद्ध उच्यारो

मन्ह जिषाणं

१. परिहरह धर समतं
२. भासासमिध छजुव
३. सटाण किच्यमेअं

१. परिहरह धरह सम्भतं
२. भासासमिध छजुव
३. सङ्गाण किच्यमेअं

सकलार्हत्

१. सकलारत्
२. आदिमं पृथ्वीनाथ
३. ध्युसत्किरीट
४. शाणाग्रोतेजितांघ्रि
५. मूर्ति मूर्तसितध्यान
६. निर्मलीकारकारिणम्
७. कमठे धरणेन्द्रेय
८. भाष्पाद्रव्योभद्रं
९. कुत्रिमाकुत्रिमानां
१०. विशालहृदया

१. सकलाऽर्हत्
२. आदिमं पृथिवीनाथ
३. धुसत्किरीट
४. शाणाग्रोतेजितांघ्रि
५. मूर्तिमूर्तसितध्यान
६. निर्मलीकारकारिणम्
७. कमठे धरणेन्द्रे य
८. भाष्पाद्रयोर्भद्रं
९. कुत्रिमाकुत्रिमानां
१०. विशालहृदया

स्नातस्या

१. विस्मयाहृतस
२. उन्मृष्टं
३. वक्तं यस्य
४. क्षीराणवांभोभृतै
५. पस्पृद्धिभि
६. गणै तेषां
७. अर्हद्वक्तं
८. वृषभैर्दारितं
९. नित्यं प्रपद्ये
१०. द्युतिमलसद्रशं
११. भालयन्द्राभद्वं
१२. मन्तं घंटाखेण
१३. प्रसूतमद्वलं
१४. सर्वानुभूति दिशतु

१. विस्मयाहृतस
२. उन्मृष्टं
३. वक्तं यस्य
४. क्षीराणवांभोभृतैः
५. प्रस्पृद्धिभिः
६. गणैस्तेषां
७. अर्हद्वक्तं प्रसूतं
८. वृषभैर्दारितं
९. नित्यं प्रपद्ये
१०. द्युतिमलसदृशं
११. भालयन्द्राभद्वं
१२. मन्तं घंटाखेण
१३. प्रसूत मद्वलं
१४. सर्वानुभूतिर्दिशतु

अजितशान्ति

१. निरुवममहपभावे
२. दुष्पसंतीणं
३. पावपसंतीणं
४. सुहपवतणं
५. धिर्ध मर्ध पवतणं
६. निचियं य गुणोहि
७. समाहिनिहि
८. हत्थिहत्थभाहु
९. सूर्धसुअमणाभिराम

१. निरुवम महप्पभावे
२. दुष्पप्पसंतीणं
३. पावप्पसंतीणं
४. सुहप्पवतणं
५. धिर्धमर्धप्पवतणं
६. निचियं य गुणोहिं
७. समाहिं निहिं
८. हत्थिहत्थभाहुं
९. सूर्धसुहमणाभिराम

अशुद्ध उच्यारो

१०. दंतं पंति
११. भाविअपमशाभिराम
१२. धरणिधरपवराईरेअ
१३. पावई न तं
१४. सिरिईरईअंजलि
१५. यलकुंडलगय
१६. वंदिठिण तोठिण तो ञिणं
१७. सभवणार्ण तो गया
१८. विआरणिआहि
१९. मंडणोडणपगारअेहि
२०. पतलेअनामअेहि
२१. भत्तिवसागय पंडिअयाहि
२२. सुरवरईगुणपिंडिअयाहि
२३. सुविक्कमाकमा
२४. विष्ममपगारअेहि
२५. गुणोहिम ञिड्डा
२६. गई गय सासयं
२७. तं मोअेउ अ नंदि
२८. पक्खिअ यठिमासिअ
२९. पुव्वुपण्णा
३०. अहवा किति
३१. ता तेलुकुधरणे

शुद्ध उच्यारो

- दंतपंति
- भाविअप्पभावणेअ
- धरणिधरप्पवराईरेअ
- पावई न तं
- सिरिईरईअंजलि
- यलकुंडलंगय
- वंदिठिण थोठिण तो ञिणं
- सभवणार्ण तो गया
- विआरणिआहिं
- मंडणोडुणपगारअेहिं
- पतलेहनामअेहिं
- भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं
- सुरवरईगुणपिंडिअयाहि
- सुविक्कमा कमा
- विष्ममप्पगारअेहिं
- गुणोहिं ञिड्डा
- गई गयं सासयं
- तं मोअेउ अ नंदिं
- पक्खिअ याठिमासिअ
- पुव्वुपण्णा
- अहवा कितिं
- ता तेलुकुद्धरणे

मोठी शान्ति

१. पुण्णयाहां पुण्णयाहां
२. भगवतो रन्तः
३. लोकोध्योतकराः
४. धृति मति
५. मेधा विध्यासाधन
६. सुगृहीतनामानो
७. विधयादेव्यो
८. ञ्णहस्पति
९. कोष्ठागारा
१०. सुहृत् स्वण सण्णन्धि
११. अस्मिंश्च भूमंडलायतन
१२. मांगल्योत्सवाः
१३. शान्तिर्गृहे गृहे
१४. उन्मृष्ट रिष्ट
१५. गोष्ठिक पुरमुण्णयाणां
१६. व्याहरणैव्याहरैखान्तिम्
१७. शान्तिर्भवतु
१८. तुष्टिर्भवतु

सर्व ज्ञानाय भवतु

- पुण्णयाहं पुण्णयाहं
- भगवतोर्हन्तः
- लोकोद्योतकराः
- धृति मति
- मेधा विधासाधन
- सुगृहीतनामानो
- विधादेव्यो
- भृहस्पति
- कोष्ठागारा
- सुहृत्-स्वण-सण्णन्धि
- अस्मिंश्च भूमंडल-आयतन (अथवा भूमंडलायतन)
- मांगल्योत्सवाः
- शान्तिर्गृहे गृहे
- उन्मृष्ट रीष्ट
- गोष्ठिक-पुरमुण्णयाणां
- व्याहरणैर्व्याहरैखान्तिम्
- शान्तिर्भवतु
- तुष्टिर्भवतु

अशुद्ध उच्यारो

१८. पुष्टिर्भवतु
२०. शान्तिकलशं गृहीत्वा
२१. कंठे कृत्वा
२२. तित्थयरमाया शिवादेवी
२३. अम्ह शिवं तुम्ह शिवं
२४. अशिवोवसमं शिवं भवतु

शुद्ध उच्यारो

- पुष्टिर्भवतु
- शान्तिकलशं गृहीत्वा
- कंठे कृत्वा
- तित्थयरमाया शिवादेवी
- अम्ह सिवं तुम्ह सिवं
- असिवोवसमं सिवं भवतु

संतिकरं

१. भेलोसर्धमाध
२. सौं रीं
३. पत्ताणं य देधं सिरि
४. महज्जाला माणवी अ
५. र्धह तित्थरक्कणणरया
६. वयन्तर जेधंणि पमुहा
७. र्धह संति नाह सम्भदिद्धि

- भेलोसहिमाध
- सौं र्हीं
- पत्ताणं य देधं सिरिं
- महजाला माणवी अ
- र्धअ तित्थरक्कणणरया
- वंतर जेधंणि पमुहा
- र्धअ संति नाह सम्भदिद्धि

अतियार

१. पंचहिं समिहिं
२. सावध्य वयन ओल्या
३. त्रण ऽगल
४. पारिष्ठापनिका समिति
५. नैवेध्य कीधां
६. अनुमोध्यां
७. अजाणतां थाप्यां
८. परिग्रहितागमन कीधुं
९. द्रष्टिविपर्यास कीधो
१०. ते सवि हुं
११. मुहपत्तिओ संघट्टी

- पंचहिं समिर्धहिं
- सावध वयन ओल्या
- तृण ऽगल
- पारिष्ठापनिका समिति
- नैवेध कीधां
- अनुमोधां
- अजाणनां थाप्यां (अजाण माणसोनां थापेलां)
- परिगृहीतागमन कीधुं
- दृष्टिविपर्यास कीधो
- ते सवि हु
- मुहपत्ति ओसंघट्टी